प्यार से प्यारी बात,,,,

'वह' बात नई भी है और प्यारी भी है जब कोई नयापन ज़ेहन में उतरता है, 'वह' नयापन आँखो को अश्रु से भर देता है, मन को अवाक् कर जाता है, बस तुम देखोगे आँखो में अश्रु भर आए पर कोई कारण नहीं है, क्योंकि जिसकी आँखो में अश्रु आए वह कारण नहीं दे सकता क्योंकि सारे कारण मन के है, जब वह नयापन आता है तो मन की स्थिति अमन हो जाती है और एक नया आयाम प्रगट होता है, जो ताज़गी से भरा है, वह लम्बे इंतज़ार को एक क्षण में मिटा जाता है, जैसे लगता है,,,, जैसे लगता है इंतज़ार करने वाला मिट जाता है और फिर से इंतज़ार ही रह जाता है, बस अब तो 'उनके' बिना मन रह नहीं सकता, क्योंकि मन ने अपने स्वभाव का रस चख लिया क्योंकि मन का अमन हो जाना मन का मोक्ष है, और जिसने अपना अंतिम चरण,,, देख लिया हो,,,,,जिसे पता चल गया हो की जो वो नहीं है,,,, और जो नहीं है फिर भी है उसे प्रयत्न से पाया नहीं जा सकता, जो है वो जो नहीं है उन्हें कैसे पा सकता है, जिसे जो नहीं उन्हें पाने की चाहत वाले को नहीं होना पड़ेगा तब वो जो नहीं है उनके साथ एक हो जाता है, तब कहा जा सकता है की जो नहीं है वो नहीं है फिर भी वो है, और सिर्फ़ जो नहीं है फिर भी है उसे ही पाया जा सकता है, जब तक मन को कोई दोड़ाए रखता था तब तक मन को ऐसा लगता था की कुछ तो मिलेगा, मन को लगता था मेरी दोड जूठी नहीं है, मेने कार पाने के लिए दोड लगाई और क्योंकि मुजे लगा था कार मिल जाने के बाद वो घड़ी आ जाएगी, पर आइ नहीं अब हवाई जहाज़ ख़रीद लू तो मंज़िल आ जाएगी, हर कोई जो भी कुछ पाने के लिए दोड रहा है वो पूरी शिद्दत से यह मान कर पाना चाहता है की उनकी चाहत पूरी हो जाए, पर पहली बात की मन की दोड अपने स्वभाव को पाने के लिए है, पर कोई उन्हें उलटी दिशा में दोडा रहा हो तो मन यह बात नहीं जानता, इसलिए पुर्री शिद्दत से जो चीज़ उन्हें पानी है उनके पीछे कोई शक नहीं है, अगर हवाई जहाज़ पाने की दोड है तो हवाई जहाज़ का नाम पड़ते है प्रसन्नता से भर जाता है, दूसरा यह कि कोई कहता है यह संसार की चीज़ें पाने में कोई सार नहीं, यह बात जो कहता है वो मन को जानने वाला है, इसलिए वो मन के साथ १००% नहीं जुड़ता, पर मन को दोडाने वाले ने बादल बनाए रखे है जिससे मन को जानने वाला मन को नहीं देख पा रहा है,, बस संकेत मिल रहा है की कार तो मिल गई पर कुछ नहीं मिला, अब हवाई जहाज़ ख़रीद ले ने से क्या मिलेगा, यह बात मन को जानने वाला संकेत के रुपमे जानता है पर मन यह बात नहीं जनता इसलिए मन को पाना है उन्हें पाने के लिए १००% काम करता है और हवाई जहाज़ का नाम सुनते ही ताज़गी से भर जाता है, अब मन की इसमें कोई ग़लती नहीं मन अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य करता है, पर अगर मन को जानने वाला परमात्मा की तरफ़ जाने के लिए संकल्प ले तो मन को दोड़ाए रखने वाली ऊर्जा ही मन को अपने स्वभाव तक पहोचाने के लिए सहयोगी होंगी और एक दिन आएगा की मन है वो अमन हो जाएगा फिर जिसने अपने स्वभाव को जान लिया है वो हमेशा अपने वास्तविक स्थिति में ही रहना चाहेगा, क्योंकि जब मन अमन हो जाता है,,,निर्विचार हो जाता है तब नयापन प्रगट होता है।

Aasthit